विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

रूपम कुमारी ,वर्ग दशम्, विषय- हिंदी

दिनांक- 9-11-20

।। अध्ययन-सामग्री ।।

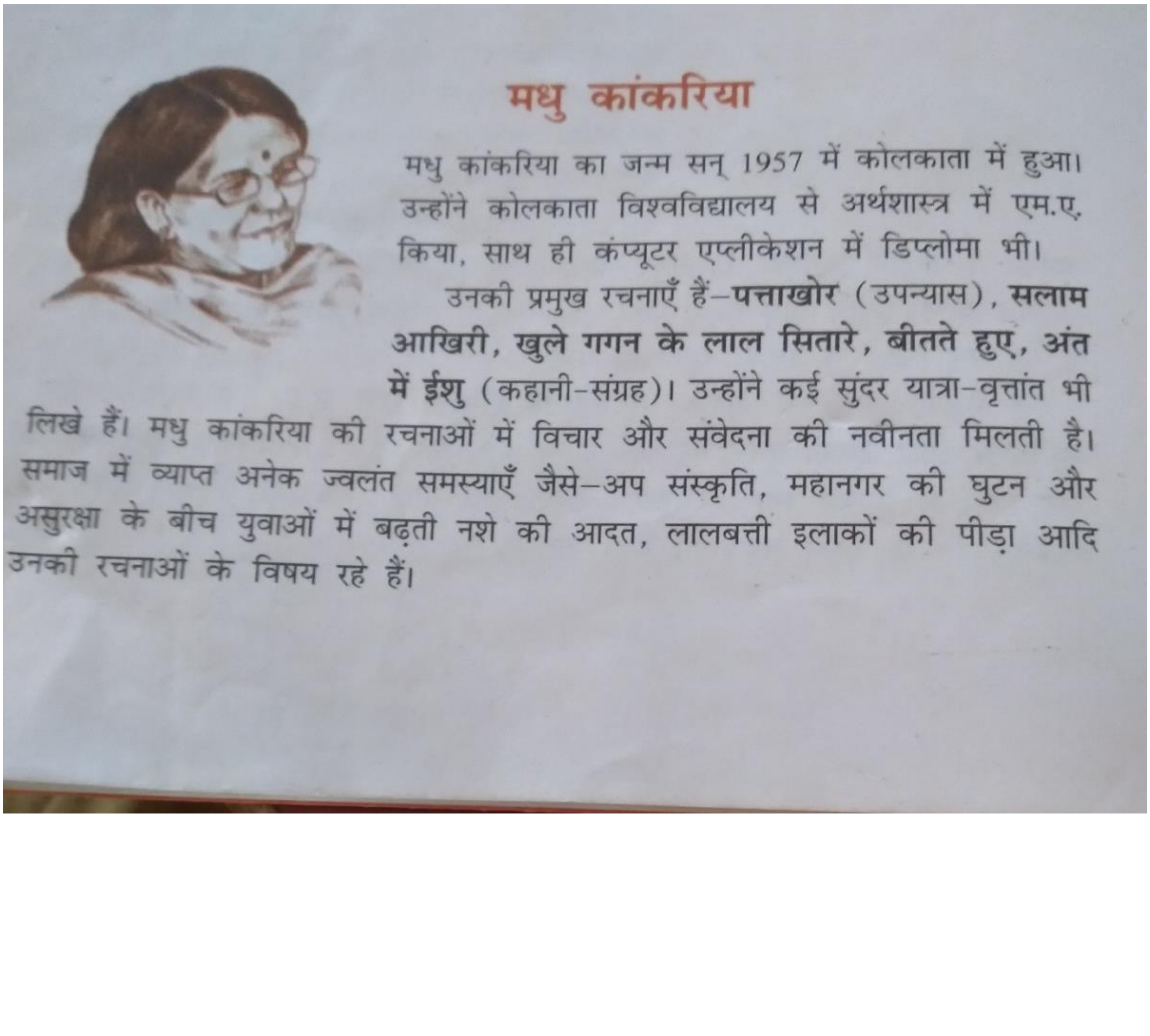

मधु कांकरिया

मधु कांकरिया का जन्म सन् 1957 में कोलकाता में हुआ। उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. किया, साथ ही कंप्यूटर एप्लीकेशन में डिप्लोमा भी।

उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं–**पत्ताखोर** (उपन्यास), **सलाम आखिरी, खुले गगन के लाल सितारे, बीतते हुए, अंत में ईशु** (कहानी-संग्रह)। उन्होंने कई सुंदर यात्रा-वृत्तांत भी लिखे हैं। मधु कांकरिया की रचनाओं में विचार और संवेदना की नवीनता मिलती है। समाज में व्याप्त अनेक ज्वलंत समस्याएँ जैसे–अप संस्कृति, महानगर की घुटन और असुरक्षा के बीच युवाओं में बढ़ती नशे की आदत, लालबत्ती इलाकों की पीड़ा आदि उनकी रचनाओं के विषय रहे हैं।

साना साना हाथ जोड़ि...

मधु कांकरिया

मैंने हैरान होकर देखा—आसमान जैसे उलटा पड़ा था और सारे तारे बिखरकर नीचे टिमटिमा रहे थे। दूर...ढलान लेती तराई पर सितारों के गुच्छे रोशनियों की एक झालर-सी बना रहे थे। क्या था वह? वह रात में जगमगाता गैंगटॉक शहर था—इतिहास और वर्तमान के संधि-स्थल पर खड़ा मेहनतकश बादशाहों का वह एक ऐसा शहर था जिसका सब कुछ सुंदर था—सुबह, शाम, रात।

और वह रहस्यमयी सितारों भरी रात मुझमें सम्मोहन जगा रही थी, कुछ इस कदर कि उन जादू भरे क्षणों में मेरा सब कुछ स्थगित था, अर्थहीन था...मैं, मेरी चेतना, मेरा आस-पास। मेरे भीतर-बाहर सिर्फ़ शून्य था और थी अतींद्रियता[1] में डूबी रोशनी की वह जादुई झालर।

धीरे-धीरे एक उजास[2] उस शून्य से फूटने लगा...एक प्रार्थना होंठों को छूने लगी... साना-साना हाथ जोड़ि, गर्दहु प्रार्थना। हाम्रो जीवन तिम्रो कौसेली (छोटे-छोटे हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रही हूँ कि मेरा सारा जीवन अच्छाइयों को समर्पित हो)। आज सुबह की प्रार्थना के ये बोल मैंने एक नेपाली युवती से सीखे थे।

सुबह हमें यूमथांग के लिए निकल पड़ना था, पर आँख खुलते ही मैं बालकनी की तरफ़ भागी। यहाँ के लोगों ने बताया था कि यदि मौसम साफ़ हो तो बालकनी से भी कंचनजंघा दिखाई देती है। हिमालय की तीसरी सबसे बड़ी चोटी कंचनजंघा! पर मौसम अच्छा होने के बावजूद आसमान हलके-हलके बादलों से ढका था, पिछले वर्ष की ही

1. इन्द्रियों से परे 2. प्रकाश, उजाला

इस यात्रा वृत्तांत को ध्यानपूर्वक पढ़ें वह समझने का प्रयास करें ।